हर्षनाथ मंदिरः स्थापत्य और मूर्तिकला का सांस्कृतिक महत्व

रामसिंह सरावगं

सहायक आचार्य, श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकरए एवं शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

rams250605@gmail.com

सारांश : राजस्थान की सांस्कृतिक एवं कलात्मक परंपरा में मंदिर स्थापत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ निर्मित मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं रहे, बल्कि तत्कालीन समाज, धर्म, कला, स्थापत्य तकनीक तथा मूर्तिकला की विकसित परंपराओं के साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हैं। राजस्थान के मध्यकालीन मंदिरों में सीकर जिले के हर्ष पर्वत पर स्थित हर्षनाथ मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह मंदिर अपनी स्थापत्य योजना, शिल्प–सज्जा, प्रतिमा–विधान तथा विविध देवी–देवताओं की मूर्तियों के कारण राजस्थान की मध्यकालीन कला का महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। हर्षनाथ मंदिर का संबंध शैव परंपरा से रहा है। मंदिर परिसर तथा उसके अवशेषों में शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, नंदी, दिक्पाल, सुरसुंदरी तथा अन्य धार्मिक एवं आलंकारिक प्रतिमाओं के अंकन से तत्कालीन धार्मिक विचारधारा और शिल्प परंपरा का परिचय मिलता है। मंदिर की स्थापत्य संरचना में नागर शैली के अनेक प्रमुख तत्व दिखाई देते हैं। इसके स्थापत्य में ऊर्ध्वमुखी संरचना, अलंकृत स्तम्भ, द्वार शाखाएँ, मंडप तथा विभिन्न प्रकार के शिल्पांकन विशेष आकर्षण के केंद्र है। प्रस्तुत शोध पत्र में हर्षनाथ मंदिर के स्थापत्य एवं मूर्तिकला का कला–ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इसमें मंदिर की योजना, निर्माण सामग्री, स्थापत्य शैली, अलंकरण, प्रतिमा–विधान, मूर्तियों के विषय–वस्तु तथा कलात्मक विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : हर्षनाथ मंदिर, स्थापत्य एवं मूर्तिकला, गर्भगृह, धार्मिक कला, सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना

हर्षनाथ मंदिर शेखावाटी का एक प्राचीन धार्मिक स्थल है। यह शेखावाटी का ही नहीं राजस्थान का भी कला की दृष्टि से एक उन्नत मंदिर है। अरावली पर्वतमाला की ऊंची चोटियों पर समुद्र तल से करीब 3100 फीट की ऊंचाई पर स्थित हर्षनाथ मंदिर राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। यह जगह शेखावाटी की हजारों साल पुरानी गौरवशाली विरासत का प्रतीक है। इस ऐतिहासिक मंदिर का लोकार्पण आषाढ़ शुक्ल पक्ष की गुरु पूर्णिमा को हुआ था। हर्ष पर्वत पर चौहान शासक विग्रहराज ने वर्ष

973 ईस्वी (करीब 1053 वर्ष पहले) इस मंदिर का निर्माण शुरू कराया था। इसे पूरा होने में पूरे 12 साल लगे। आज भी यह मंदिर इतिहास, आस्था और अद्भुत स्थापत्य कला का अनूठा संगम माना जाता है। इतिहासकारों के अनुसार, हर्षनाथ मंदिर उस दौर की शिल्पकला का बेजोड़ उदाहरण था। मंदिर का ऊंचा शिखर, विशाल गर्भगृह, नक्काशीदार स्तंभ और पत्थरों पर उकेरी गई कलात्मक आकृतियां इसकी भव्यता को दर्शाती है। यहां इंद्र, कुबेर, विष्णु, लक्ष्मी, शेषनाग और गणेश सहित कई देवी–देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित है। मंदिर के लोकार्पण की याद में काले पत्थर पर देवनागरी लिपि में शिलालेख भी अंकित है। इतिहास के उतार–चढ़ाव में यह मंदिर भी अछूता नहीं रहा। मुगल बादशाह औरंगजेब की सेना ने इस भव्य मंदिर को ध्वस्त कर दिया, लेकिन इसकी कलात्मक धरोहर आज भी लोगों को उस स्वर्णिम युग की याद दिलाती है। मंदिर से मिली दुर्लभ प्रतिमाएं सीकर के राजकुमार हरदयाल सिंह राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित रखी गई हैं। इन प्रतिमाओं की बारीक नक्काशी और शिल्पकला अद्भुत है।. यहां केवल भगवान शिव से जुड़ी प्रतिमाएं ही नहीं, बल्कि वैष्णव, सूर्य और शाक्त संप्रदाय से जुड़े अनेक धार्मिक शिल्प और प्रसंग भी मिले हैं।[1]

शोध पद्धति

हर्षनाथ मंदिर का स्थापत्य और मूर्तिकला के अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक शोध–पद्धति को अपनाया गया है। मन्दिर की वर्तमान स्थिति, स्थापत्य कला एवं मन्दिरों का अभिलेखीकरण कर उनका क्रमबद्ध दस्तावेजीकरण किया गया है। हर्षनाथ मंदिर की कला एवं स्थापत्य का अध्ययन करने के लिए एक ऐसी शोध पद्धति का चयन किया गया है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक, कला एवं स्थापत्य के विविध पहलुओं का सूक्ष्म और वैज्ञानिक विश्लेषण कर सके।

- प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत हर्षनाथ मंदिर के स्थापत्य, मूर्तिकला एवं वास्तुकला संरचनाओं, इतिहासकार और अन्य विद्वानों से संवाद किया गया है।
- द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रकाशित एवं अप्रकाशित पुस्तकें, शोध प्रबंध, शोध पत्र, सरकारी प्रतिवेदन, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के अभिलेख, पत्र–पत्रिकाएं तथा अन्य प्रामाणिक तथ्यों का अध्ययन किया गया है।

साहित्य समीक्षा

सिंह, शत्रुजीत, शेखावाटी का धार्मिक जीवन (एक ऐतिहासिक अध्ययन), सारस्वत प्रकाशन, 2024 – प्रस्तुत पुस्तक में स्वतंत्रता से पूर्व के शेखावाटी के धार्मिक जीवन पर शोध पूर्ण एवं रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में तत्कालीन प्रमुख पर्व, त्योहारों एवं धार्मिक रीति–रिवाज को विस्तार से समझाया गया है। इसी के साथ–साथ शेखावाटी के धार्मिक जीवन के स्तंभ रहे हर्षनाथ मंदिर, जीण माता,

शाकंभरी, लोहार्गल, नरहड़, खाटूश्याम जी आदि अनेक मंदिरों का ऐतिहासिक एवं कलात्मक अध्ययन किया गया है।

वशिष्ठ, नीलिमा, कला विमर्श : राजस्थान का स्थापत्य तथा मूर्तिकला, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2016 – कला–ऐतिहासिक अध्ययन एक व्यापक दृष्टिकोण की अपेक्षा रखता है। ऐतिहासिक प्रामाणिकता तथा कलात्मक सौन्दर्य मूल्यों में संतुलन कला–इतिहास के लिए वांछनीय है। कलाओं में स्थापत्य तथा मूर्तिशिल्प सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, प्राचीन एवं शास्त्रीय संदर्भों से जुड़े पक्ष हैं। राजस्थान के संदर्भ में कला की इन दोनों विधाओं के उदाहरण राजस्थान में कालीबंगा और आहड़ की सभ्यताओं के प्रारम्भिक युगों से 20वीं शताब्दी तक निरन्तर प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थान के विभिन्न मंदिरों के साथ हर्षनाथ मंदिर का ऐतिहासिक एवं कलात्मक अध्ययन भी विस्तारपूर्वक किया गया है।

पूनिया, प्रमिला, राजस्थान के गौरवशाली मन्दिर : इतिहास, कला एवं संस्कृति, खण्डेलवाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2012 – प्रस्तुत पुस्तक में 70 मन्दिरों का विवरण दिया गया है तथा मन्दिर निर्माण के इतिहास को भी प्रस्तुत किया गया है। राजस्थान के विभिन्न मंदिरों की स्थापत्य कला में यद्यपि अनेक मंदिर श्रेष्ठता की कसौटी पर खरे उतर जाते हैं, लेकिन हर्षनाथ मंदिर अवश्य ही कला की दृष्टि से आज आश्चर्यचकित कर देने वाला है।

कासलीवाल, मीनाक्षी, भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009 – पुस्तक को तीन काल खण्डों में विभक्त किया गया है। पुस्तक में मूर्तिकला की प्रारम्भिक अवस्था से पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला तक प्रकाश डाला गया है।

प्राचीन भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकलाएं धर्मरूपी वट–वृक्ष की छत्र–छाया में पल्लवित, पुष्पित एवं विकसित हुई। देव–परिवार के उद्भव तथा विकास की गौरव गाथा इसकी सजीव तथा जीवन्त व्याख्या है। इस दृष्टि से सीकर के हर्षनाथ मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिकला में विशिष्ट योगदान भारतीय कला की धरोहर है।

राजस्थान के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से भिन्न–भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों से संबंधित मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। ये मूर्तियां मनुष्य की आस्था तथा विश्वास की अभिव्यक्ति मात्र ही नहीं है अपितु अत्यधिक सम्पन्न, वैविध्यपूर्ण, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि की मूर्त प्रस्तुतियां हैं। ये मूर्तियां केवल सौन्दर्यपकर एवं कलात्मक मूल्यों की ही झलक प्रस्तुत नही करती बल्कि सांस्कृतिक समन्वय का भी उत्कृष्ट परिचायक है।[2]

सीकर से दक्षिण में अरावली पर्वत की तलहटी में एक गांव है हर्षनाथ, जिसकी ऊँचाई समुद्री तट से 3000 फीट है। ऐसा माना जाता है कि जब शंकर भगवान ने त्रिपुरासुर का वध किया,तो देवताओं ने

इसी पहाड़ी पर बैठकर शंकर भगवान को प्रसन्न किया था। इसलिए इस पहाड़ी का नाम हर्षनाथ पड़ गया। पहाड़ी पर भगवान शंकर का मन्दिर है।

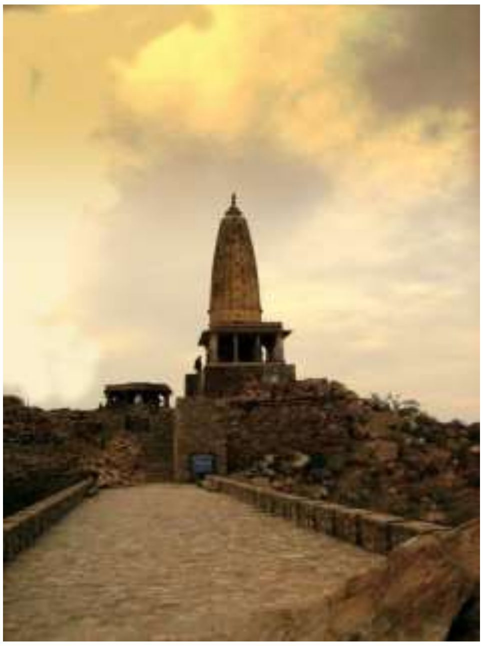

चित्र 1– हर्षनाथ मन्दिर

हर्षनाथ मंदिर का स्थापत्य उत्तर भारतीय नागर मंदिर स्थापत्य परंपरा के विकास को समझने में महत्वपूर्ण है। गर्भगृह, अंतराल, मंडप, अधिष्ठान, द्वारशाखा और शिखर जैसे स्थापत्य घटक मंदिर निर्माण की विकसित तकनीक एवं योजना का परिचय देते हैं। मंदिर के स्थापत्य में संरचनात्मक उपयोगिता के साथ सौंदर्यबोध का समन्वय दिखाई देता है। इससे पता चलता है कि मध्यकालीन समाज में मंदिर निर्माण केवल धार्मिक आवश्यकता नहीं था, बल्कि यह सामूहिक सांस्कृतिक और कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी था।[3]

हर्षनाथ मंदिर का निर्माण लगभग 12 वर्षों तक शिल्पियों एवं सिलावटों की अनवरत साधना से सम्पन्न हुआ। मंदिर की भव्य मूर्तियों, उत्कीर्ण स्तंभों, तोरण द्वारों और छतों का समस्त कार्य संगीन पत्थरों के बारीक जोड़ एवं अद्भुत खुदाई से किया गया। इसमें प्रयुक्त पत्थर खाटू (नागौर), मकराना तथा मालवा व मेवाड़ से लाया गया था। खाटू का पत्थर समय एवं प्राकृतिक मौसम की मार से क्षरित नहीं होता। इसके अलावा कसौटी पत्थर को मोम की भांति तराश कर कृष्णवर्ण की मनोरम मूर्तियाँ बनाई गई थीं।

चित्र 2: मंदिर का प्रवेश द्वार

प्राचीन हर्षनाथ मंदिर से चाहमान विग्रहराज द्वितीय का विक्रम संवत् 1030[4] का एक अभिलेख प्राप्त होता है जिसमें हर्षनाथ का विशद् वर्णन है। अभिलेख के अनुसार मंदिर का निर्माण हर्षगिरी पर विक्रम संवत् 1013 की आषाढ़ मास की शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को सम्पूर्ण हुआ था। यह अल्लट नाम के शैव आचार्य द्वारा बनवाया गया था, जो यहीं निवास करते थे। इस मंदिर का निर्माण जनता द्वारा दिये गये दान की राशि से संभव हुआ था।[5] यहाँ श्रीहर्ष[6] नाम से महादेव की उपासना की जाती है। यह नाम कही और प्रचलित नही है। शिव के इसी विशेषण के आधार पर पहाडी का नाम भी हर्षगिरी[7] पड़ गया। यहाँ शिव के त्रिपुरान्तक[8] स्वरूप एवं त्रिपुर–विजय के उपरान्त हर्षोल्लास से गद्गद हर्षदेव[9] नाम से शिव की अर्चना की गई है।

मंदिर का सौदर्न्य उसके विस्तृत सभामंडप और तोरणद्वार[10] में निहित था। गर्भगृह के बिल्कुल सामने नन्दी की अर्चना की गई। मंदिर का सौन्दर्य उसके विस्तृत सभामण्डप और तोरणद्वारा में निहित था। गर्भगृह के बिल्कुल सामने नन्दी की अलंकृत प्रतिमा स्थापित थी। इस मंदिर से संयुक्त छोटे आयतनो में विकटा एवं पांडवों की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित थी। अभिलेख में मंदिर से जुडे अन्य भवनो का भी वर्णन है। मंदिर का स्वयं का उद्यान था जिससे हर्षदेव की अर्चना के लिये पुष्प प्राप्त होते थे। पशुओ के पानी के लिये बावडी तथा शुद्व जल के लिये एक कूप था जो पीने तथा उद्यान सींचने के काम आता था। मंदिर के सामने का प्रागंण चिकने पत्थरों से जुडा हुआ था जो सपाट तथा चलने में सुगम था। वापी, कूप, उद्यान आदि के निर्माण का कार्य भावद्योत द्वारा पूरा करवाया गया, जो कि अल्लट के शिष्य थे। यह भी शैव आचार्य थे तथा अल्लट की मृत्यु के बाद इन्होने ही मंदिर का शेष निर्माण कार्य भार वहन किया था।

हर्षनाथ का मुख्य मंदिर भगवान शंकर की पंचमुखी प्रतिमा वाला विशाल शिवालय था। शिव का नाम पंचानन है। मंदिर में सर्वाधिक आकर्षक एवं भव्य वस्तु शिव के वाहन नंदी की संगमरमर निर्मित विशाल प्रतिमा है। यह प्रतिमा अपनी विशालता एवं कलात्मकता के लिए अनूठी मानी जाती है जिसका वजन कई टनों में आंका जाता है। यह प्रतिमा 10वीं शताब्दी के मंदिर की तुलना में अधिक नवनिर्मित प्रतीत होती है, लेकिन इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है।[11]

चित्र 3: भक्त नंदी के समक्ष प्रणाम करता हुआ

श्वेत संगमरमर से निर्मित विशाल नंदी की मूर्ति सभामंडप के सामने प्रतिष्ठित थी। पहले इस पर एक छतरी बनी हुयी थी जो गिर गयी। तोरण के नीचे के भाग के स्तंभ आज भी देखे जा सकते हैं जिन पर अत्यधिक अलंकरण है। मंदिर के चारों ओर देवताओं की मूर्तियाँ थीं। यहाँ पाण्डुपुत्रों की विशाल प्रतिमाएँ भी खड़ी थीं। भगवान् शंकर का यह मंदिर जो हर्षनाथ के नाम से प्रसिद्ध था भूतकाल में किसी समय गिर गया। हमें यह समय निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है गिरने के कारण का पता नहीं है। एक बात निश्चित है कि जब राव शिवसिंह ने पास में एक शिव मंदिर बनाया तो उस समय तक पुराना मंदिर गिर चुका था। नया शिव मंदिर वि. 1775 में बन गया था। इसमें पुराने मंदिर के कुछ मूर्ति समूह लगे हुये हैं। 1834 ई. में डॉ. जी.ई. रेन्किन और सरजेन्ट ई.डीन ने इसे देखा तब तक अवशेष पड़े हुए थे।[12]

चित्र 4: अलंकृत प्रतिमाएँ

चित्र 5: अलंकृत हाथी प्रतिमा

मुख्य मंदिर की दक्षिण दिशा में कुछ सीढ़ियाँ उतरने के पश्चात् भैरवनाथ का मंदिर स्थित है। यह मंदिर मुख्य मंदिर की अवशिष्ट सामग्रियों को जोड़कर निर्मित किया गया है। इसके मध्य गुफा जैसा तलघर भी स्थित है, जहाँ प्राचीन काल में साधु–संत एवं महात्मा तपस्या में लीन रहते थे।

भैरव मंदिर परिसर में सोलह भुजा वाली माँ दुर्गा की अत्यंत भव्य प्रतिमा स्थापित है। देवी की प्रत्येक भुजा में विभिन्न अस्त्र–शस्त्र सुसज्जित हैं तथा एक हाथ में जपमाला एवं दूसरे हाथ में ज्ञान–ग्रंथ स्थित

है, जो भारतीय संस्कृति में शक्ति और भक्ति के सुंदर समन्वय को प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त इसी मंदिर में महिषासुरमर्दिनी की खंडित प्रतिमा तथा अर्द्धनारीश्वर रूप में स्तनधारी गणपति की अत्यंत मौलिक प्रतिमा है। शिव का अर्द्धनारीश्वर रूप सर्वविदित है, परंतु विघ्नहर्ता गणपति का अर्द्धनारीश्वर रूप शिल्प कला की दृष्टि से दुर्लभ एवं अद्वितीय है।

भैरव मंदिर के तलघर में भैरवजी की दो प्रतिमाएं स्थापित हैं, जिन्हें 'काला भैरव' एवं 'गोरा भैरव' कहा जाता है। इस मंदिर में अनादि काल से अखण्ड दीप प्रज्वलित है। यहाँ दीवारों पर दीप ज्योति की कालिमा छाई हुई है तथा भैरव प्रतिमा के समक्ष प्रस्तर का विशाल तेल पात्र रखा हुआ है जिसमें श्रद्धालु तेल चढ़ाते हैं। भैरवजी को शाकाहारी प्रसाद में तेल एवं बाकले अर्पित किए जाते हैं। अंचल में मान्यताओं के अनुसार दोनों भैरव रूपों की पूजा माह के दो पक्षों के अनुसार होती है शुक्ल पक्ष में गोरे भैरूजी की तथा कृष्ण पक्ष में काले भैरूजी की। नवजात शिशुओं का मुण्डन संस्कार शुक्ल पक्ष के रविवार को यहाँ सम्पन्न होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में यहाँ विशाल मेला आयोजित होता है।

वर्तमान में मंदिर खंडहर अवस्था में है। आक्रमण के बाद मंदिर की संरचना पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि यह आज तक उससे उबर नहीं पाया है। हालांकि, आक्रमण से जो चीज नष्ट नहीं हुई, वह है इसकी भव्य वास्तुकला, जो आज भी अपनी सुंदरता बरकरार रखे हुए है। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही सबसे पहले नंदी बैल दिखाई देता है, जिस पर भगवान शिव सवार होते थे। अंदर जाने पर आपको देवी पार्वती (भगवान शिव की पत्नी) और उनकी सेविकाओं की मूर्ति दिखाई देगी। स्तंभों पर उकेरी गई बारीक नक्काशी और अन्य हिंदू देवी–देवताओं की विभिन्न मूर्तियों से मंदिर की वास्तुकला बेहद खूबसूरत बन जाती है। मंदिर के अंदर जाने पर मुख्य मंडप (वह स्थान जहाँ सभी प्रमुख और महत्वपूर्ण अनुष्ठान होते थे) स्थित है, जहाँ भगवान शिव एक वीर पुरुष की तरह विराजमान हैं।

हर्षनाथ मंदिर की मूर्तिकला तत्कालीन समाज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ी हुई हैं। इन प्रतिमाओं की संरचना, मुद्राएँ, आभूषण, वस्त्र तथा केश–विन्यास का सूक्ष्म अंकन तत्कालीन शिल्पकारों की तकनीकी दक्षता को प्रदर्शित करता है। अतः मूर्तियाँ केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि समकालीन कला–संवेदना और सौंदर्यबोध के ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। मंदिर की मूर्तिकला में मानव आकृतियों और आलंकारिक प्रतिमाओं के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक जीवन की कुछ झलकियाँ प्राप्त होती हैं। आभूषणों, वस्त्रों, केश–विन्यास तथा शारीरिक मुद्राओं का अंकन उस समय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुचियों के अध्ययन में सहायक हो सकता है। विशेष रूप से नायिका एवं सुरसुंदरी प्रतिमाएँ तत्कालीन कलाकारों की स्त्री–सौंदर्य संबंधी कलात्मक अवधारणा को व्यक्त करती हैं। मंदिर के विशाल स्तंभों एवं आंतरिक छतों पर बेल–बूटों, पुष्प–वल्लरी तथा ऋषियों–महर्षियों की ध्यानमुद्राओं वाली मूर्तियों का अनुपम शिल्पांकन था। मंदिर का विशाल शिखर अति ऊँचा था, जिस पर एक बहुत बड़ा दीप पात्र जंजीर व

चरखी की सहायता से चढ़ाया जाता था। इसमें काकड़ों और तेल का दीप जलता था, जिसकी ज्योति का प्रकाश कई किलोमीटर दूर से दिखाई देता था।[13]

वर्तमान समय में हर्षनाथ मूर्तियों का प्रलेखन नहीं है जिसके कारण इसका सांस्कृतिक महत्व परिलक्षित नहीं हो पाता है। प्रलेखन के नाम पर केवल सामान्य नाम देकर उनकी बहुत ही सूक्ष्म जानकारी एक पंजिका में दर्ज है जो डिजिटल प्रलेखन एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति शोध, शिक्षा, अनुसंधान, पुरातात्विक एवं राजस्थान के सांस्कृतिक इतिहास के लिए पर्याप्त नहीं है। मूर्तिकला कला के क्षेत्र में राजस्थान ने हमेशा से ही अपनी सभ्यता, संस्कृति को सहेज के रखा है और इसलिए मूर्तिकला को राजस्थान में अनुकूल वातावरण मिला जिससे यहाँ की मूर्तिकला आज अपने इस विश्वविख्यात स्तर पर पहुंच गई है। राजस्थान में उत्कृष्ट मूर्तिकला होते हुए भी लोग उसके बारे में सही तरह से नहीं जानते है जिसके कारण राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन अधूरा रह जाता है जो कि एक सुनिश्चित प्रलेखन द्वारा संभव है।

हर्षनाथ की मूर्तियां मनुष्य की आस्था तथा विश्वास की अभिव्यक्ति मात्र ही नहीं है अपितु अत्यधिक सम्पन्न, वैविध्यपूर्ण, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि की मूर्त प्रस्तुतियाँ भी है। हिन्दू प्रतिमाओं के सम्मुख उपस्थित दर्शक केवल उसके सौन्दर्यात्मक मूल्यों की ही प्रशंसा नहीं करता अपितु एक प्रतीक गूढार्थ का अवगाहन भी करता है, जिसमें शताब्दियों का चिन्तन मूर्त हुआ है। हर्षनाथ की मूर्तियां एक पुस्तक के समान है, जिसमें दार्शनिक चिन्तन के आदि रूप की छवियाँ, गूढ तत्वमीमांसा का उत्कर्ष एवं भक्तिपूर्ण रहस्यात्मकता के चरम आनन्द की स्थिति का एकत्र सन्निविष्ट होता है जो कि हमे हर्षनाथ की मूर्तियो में परिलक्षित होता है व राजस्थान के सांस्कृतिक महत्व की गाथा को उजागर करता है।

हर्षनाथ की मूर्तियों के प्रलेखन का मुख्य उद्देश्य

मानव के इतिहास, विकास एवं संस्कृतियों अथवा प्राकृतिक इतिहास एवं पर्यावरण इत्यादि को संग्रहित वस्तुओं के माध्यम से उद्धाटित करने का प्रयत्न करते हैं। संग्रह के बारे मे मूलभूत जानकारी जैसे यह वस्तु क्या है? इसे किसने बनाया? यह कब और कहां बनाई गई? इसके बनाने की तकनीक क्या थी? इसे किन लोगो ने इस्तेमाल किया? इत्यादि की नितान्त आवश्यकता पडती है। इस प्रकार की आधारभूत जानकारी के अभाव में संग्रह अर्थहीन हो जाता है तथा उसकी उपयोगिता सीमित हो जाती है। संग्रह जिज्ञासा की वस्तु मात्र रह जाती है।

संग्रह के बारे में आधारभूत जानकारी को सुनिश्चित पद्वति द्वारा रिकार्ड करने की प्रक्रिया को प्रलेखन अथवा दस्तावेजीकरण कहा जाता है। प्रलेखन द्वारा वस्तु को एक अंक दिया जाता है जो उस वस्तु पर लिख दिया जाता है। यह अंक विभिन्न वस्तुओ की अलग से पहचान बनाता है तथा विभिन्न दस्तावेजो

के साथ उनका संबंध स्थापित करता है। सुव्यवस्थित प्रलेखन उसके मूल ध्येय की पूर्ति को सुचारू रूप से संचालित करने में अति सहायक होता है, जो निम्नलिखित है–

- सांस्कृतिक महत्व, प्रदर्शन एवं शिक्षा हेतु संग्रह से संबंधित आधारभूत जानकारी प्राप्त करना। क्योंकि आधारभूत जानकारी के बिना संग्रहित मूर्तियां अर्थहीन हो जाती है। इस कारण संग्रहण के समय तथा तत्पश्चात् शोध द्वारा संग्रह की मूर्तियों के बारे में प्राप्त जानकारी को लिखित रूप से प्रलेखन करना आवश्यक है।

- संरक्षण की दृष्टि से संग्रह की मूर्तियों का रिकार्ड संग्रहित मूर्तियों का संरक्षण महत्वपूर्ण ध्येय है। इस हेतु मूर्तियों की अवस्था किसी समय विशेष में कैसी है का रिकार्ड तैयार करना। वस्तु की दशा में हुए परिवर्तनों तथा उसे दिये गये उपचार को भी समय समय पर विवरण में सम्मिलित किया जाना।

- कानूनी अधिकार या मिल्कियत का प्रमाण प्रलेखन के द्वारा मूर्तियों का कानूनी अधिकार प्राप्त होता है। जो भविष्य में चुराये जाने पर उस वस्तु के दस्तावेज के रूप में पुनः प्राप्त करने में सहायता करता है।

- मूर्तियों के हिसाब की जांच संग्रहित वस्तुओं से प्रायः सरकार द्वारा दिए गए वार्षिक अथवा विशेष अनुदान की राशि का अध्ययन करना है। संग्रह के हिसाब–किताब की जांच पड़ताल दस्तावेजों के आधार पर करना।

- मूर्तियों की वर्तमान स्थिति तथा स्थिति परिवर्तन का रिकार्ड विभिन्न मूर्तियां किन स्थानों से प्राप्त की गई तथा समय समय पर उसका स्थान परिवर्तन भी हुआ है क्या? मूर्तियों की स्थिति रिकार्ड को सुव्यवस्थित करना, साथ साथ संग्रहित मूर्तियों का सुरक्षा प्रबन्ध का भी अध्ययन किया जाना।[14]

निष्कर्षतः

हर्षनाथ मंदिर का सांस्कृतिक एवं कलात्मक महत्व अत्यधिक है। इसकी वास्तुकला मध्यकालीन राजस्थान की वास्तु परंपरा, तकनीकी और सौंदर्य बोध की जानकारी प्रदान करती है, जबकि इसकी धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ सामाजिक जीवन, वेशभूषा, संगीत, नृत्य और सौंदर्य बोध की जानकारी प्रदान की जाती है। मंदिर सीकर एवं शेखावाटी क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण प्रतीक है।

संदर्भ

1 स्वामी, गोपाल राम, शेखावाटी : सांस्कृति केन्द्र, नगर एवं कस्बे, गोपाल राम स्वामी, सीकर, 2005, पृ. 110

2 वशिष्ठ, नीलिमा, राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008, पृ. 1

3 विष्णुधर्मोत्तर पुराण, ।।।, अध्याय 82, 7–8

4 ''एक्सक्वेशन्स एट बसाढ़ '', आर्कियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, 1903–04, पृ. 107

5 ''हस्तीद्वियम विजानीहि शंखपद्मावुभौ निधी''
विष्णुधर्मोत्तर पुराण, ।।।, अध्याय 82, श्लोक 10

6 यह मूर्तिं पडानगर के नीलकंठ मंदिर (अलवर) के प्रागंण में मंदिरो की भग्न मूर्तियो में पडी है।

7 ओसियां की गजलक्ष्मी प्रतिमा (लगभग 9वीं शताब्दी की), सरदार संग्रहालय, जोधपुर में संरक्षित, प्रदर्शित मूर्ति संख्या 107/12485.

8 आबानेरी से प्राप्त गजलक्ष्मी, आम्बेर संग्रहालय, प्रदर्शित मूर्ति संख्या आबा/14/139

9 झालरापाटन के सूर्य मंदिर में गजलक्ष्मी की प्रतिमा यथास्थान है। यह शिखर के शकुनासा पर उत्कीर्ण है।

10 वशिष्ठ, नीलिमा, राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008, पृ. 88

11 एपीग्राफिया इन्डिका, XXVII, पृ. 27–33

12 स्वामी, गोपाल राम, शेखावाटी : सांस्कृति केन्द्र, नगर एवं कस्बे, गोपाल राम स्वामी, सीकर, 2005, पृ. 111

13 सिंह, शत्रुजीत, शेखावाटी का धार्मिक जीवन (एक ऐतिहासिक अध्ययन), सारस्वत प्रकाशन, 2024, भूमिका से साभार

14 जैन, संजय, म्यूजियम एण्ड म्यूजियालॉजी एक परिचय, बडौदा, 2006, पृ. 20–27